International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सांस्कृतिक व सामाजिक सरोकारों की संवाहक – माँ नन्दा देवी

सोनी घिल्डियाल

शोधकर्त्री, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश:
भारतीय लोकसंस्कृति के उपादानों के अन्तर्गत पर्वत, नदियाँ, वन-उपवन, ऋतुएँ एवं पशु-पक्षियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पर्वतों में सर्वप्रथम हिमालय पर्वत का नाम सर्वोपरि है क्योंकि यह हमारे महान ऋषिमुनियों की तपो: स्थली रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में जन्मे वेद-पुराण, विश्व साहित्य के प्राचीनतम ग्रंथों की श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। हिमालय के उच्च शिखरों पर बदरिकाश्रम, कैलाश, माँ गौरी, नन्दा देवी के तीर्थ स्थान व्याप्त हैं, जो प्राचीन महर्षियों की साधना के कीर्तिस्तम्भ के रूप में खड़े हैं।

बीज शब्द: पर्वत, नदियाँ, गांव, पशु-पक्षी, वेद-पुराण।

समस्त पुराणों के अन्तर्गत उत्तराखण्ड की महिमा के गुणगान व्याप्त हैं। स्कन्दपुराण के केदारखण्ड एवं मानसखण्ड में उत्तराखण्ड के दोनों अंचलों गढ़वाल एवं कुमाऊँ के देवस्थलों एवं धार्मिक एवं पौराणिक तीर्थस्थलों का वर्णन व्याप्त है। आदि शक्ति स्वरूपिणी माँ नन्दादेवी का पवित्र धाम उत्तराखण्ड है। माँ नन्दा गढ़वाल व कुमाऊँ की इष्टदेवी हैं। ललितसूर के ताम्रलेखों से स्पष्ट होता है कि कत्यूरी राजा आदि शक्ति नन्दादेवी के परमसेवक कहलाने में गौरव का अनुभव करते थे। अतः कत्यूरी राजवंश के राजाओं ने माँ नन्दा को अपनी इष्टदेवी माना है इसलिए माँ नन्दा राजराजेश्वरी के रूप में उत्तराखण्ड के प्रत्येक गाँवों में पूजी एवं नचायी जाती हैं।
माँ नन्दा पार्वती जी का ऐसा स्वरूप हैं, जिनके प्रति उत्तराखण्ड में अतयंत श्रद्धा एवं भक्ति की भावना दिखाई देती है। हिमालय पुत्री पार्वती को यहाँ विभिन्न नामों से जाना जाता है, जिनमें – कालिंका, काली, नन्दादेवी, शाकम्भरी, सुरकण्डा, चन्द्रबदनी इत्यादि प्रमुख हैं।
कालिमठ, चन्द्रबदनी, मैठाणा (महिषस्थान) आज भी सुप्रसिद्ध शक्ति पीठ माने जाते हैं। तन्त्रग्रंथों के आधार पर भी आदि शक्ति स्वरूपा के विभिन्न नाम हैं, जिनमें वह बद्रीनाथ में श्री हिमालय, श्री शैल में श्री रूप में, पिंडारक वन में धन्या और सुरसा स्वरूप में केदार में मार्गदायिनी या वरदा एवं चन्द्रपुर के अन्तर्गत सीता नाम से जनविख्यात थीं। गन्धमादन में वह कामाचारिणी या कमाक्ष कहलाई यह भी उल्लिखित है कि **हिमालय में वह नन्दा, मन्दा, शिवानन्दा, शुभानन्दा, सुनन्दा, समानन्दा और नन्दिनी भी कहलाती थीं।**
गढ़वाल के अन्तर्गत इन्ही नामों की परम्परा में माँ पार्वती **'नन्दा'** कहलाती हैं तथा प्रत्येक वर्ष उनकी **'जात'** मनायी जाती है। नन्दा माँ ऐसी देवी हैं, जिनकी (देवयात्रा) **'जात'** गढ़वाल व कुमाऊँ दोनों मण्डलों के जनसमुदाय एकत्रित होकर पूजा में शामिल होते हैं। अतः धार्मिक एवं सामाजिक एकता के दृष्टिकोण से माँ नन्दा की जात पर्वतीय एकता की दृष्टि से ईश्वरीय स्वरूप है, जिसकी छत्रछाया में एकता का पुट समाहित होता है।
नन्दा की जात भाद्रपद शुक्लाष्टमी को गढ़वाल और कुमाऊँ में मनायी जाती है। उसी दिन नन्दाष्टमी का मेला

लगता है। विश्व प्रसिद्ध हिमालय की अधिष्ठात्री देवी की महायात्रा **'श्री नन्दा देवी राजजात'** 280 कि.मी. लम्बी एवं दुर्गम तथा कठिन यात्रा है। यह आधुनिक उत्तराखण्ड राज्य की ऐतिहासिक एवं अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। प्रत्येक 12 वर्ष बाद आयोजित होने वाली नन्दादेवी राजजात यात्रा एशिया की सबसे लम्बी धार्मिक पदयात्रा मानी जाती है, जो कि चमोली-गढ़वाल की सर्वोच्च ऊँची चोटी त्रिशूल की 280 कि.मी. की परिक्रमा करके नौटी गाँव से हेमकुण्ड व वापसी में कठिनतम पैदल यात्रा है।

विभिन्न पुराणों के अन्तर्गत माँ नन्दा का वर्णन यत्र-तत्र अनेक प्रसंगों में आया है। ऐसी जनश्रुति भी प्रचलित है कि माँ नन्दा दक्ष प्रजापति की सात बेटियों में से एक थीं। नन्दाष्टमी के दिन माँ नन्दा को उनके नन्दागिरि स्थित ससुराल के लिए विदा किया जाता है। इस अवसर पर नन्दा को डोली में बिठाकर सजाकर विदा किया जाता है। **नन्दाष्टमी के एक दिन बाद नवमी के दिन नन्दापाती का विशिष्ट पूजन किया जाता है, जिसे छोटी नन्दाजात के नाम से सम्बोधित किया जाता है। भाद्रपद शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन माँ नन्दा के जागर नन्दा के मन्दिर में या घरों में लगाए जाते हैं। जागरी-गायक के माध्यम से जब माँ नन्दा के मायके के प्रति प्रेम एवं ससुराल जाने की विरह गीतों के माध्यम से सुनाई जाती है तो माँ नन्दा का पस्वा उसी तरह नाच करता है। यह क्रम निरन्तर सात दिनों तक चलता है, जिन्हें 'भितली पत्ती' कहा जाता है।** नवें दिन जंगल से लाए रासला/चीड़ के लम्बे वृक्षों को माँ नन्दा के चौक में गाड़कर वृक्ष को सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित कर उसमे मुँगरी (मकई), ककड़ी, चबेने इत्यादि खाद्य पदार्थ बाँध दिए जाते हैं। तत्पश्चात उस लम्बे वृक्ष की नन्दा को (प्रतिरूप समझकर) खड़ाकर पूजा जाता है तथा **'नन्दा जागर'** लगाए जाते हैं। ढोल-दमाऊँ एवं बाजों के माध्यम से नृत्य किया जाता है तथा शिव-पार्वती संवादात्मक गीत, जागर एवं नृत्य होता है। इस अवसर पर गाया जाने वाला लोकप्रिय गीत क्रमशः है -

(नन्दा देवी – जागर गीत)
"मैणावन्ती माता ते सात छई बेटी,
मैणावन्ती माता ते सात छई बेटी ।
कोई बेटी बिवाई घोड़िला गंगाड़ी,
कोई बेटी बिवाई वे सेला गांसा रे।
कोई बेटी दीनी भै कौरूड़ा काटा रे,
मैणावन्ती माता ते सात छई बेटी।
कोई बेटी दीनी भै उच्चाकाशी हिलांसी,
यों बांका टोटन भे मुखड़यो मां योन,
उच्चाकाशी लाख हवै क्वेंरी तोनी योन,
उच्चाकाशी कैलाश हवै क्वें कनीं ब्यासो
भाई रै जा वारा भै- बैण रोण बैठिंगे,
सात-पाँच बैणयो मां को बैणयो को लाडो।"[1]

(स्वरलिपि) राग मालकौंस

सा ग॒ ग॒	म – –	ग॒ म सा	ग॒ म ग॒	ग॒ – ग॒	म – –
मै णा व	न्ती s s	मा ता तें	सा त छ	ई s बे	टी s s
x	0	x	0	x	0
सा सा ग॒	सा – –	म म सा	ग॒ म ग॒	ग॒ – ग॒	म – –
मै णा व	न्ती s s	मा ता तें	स त द	ई s बे	टी s s
x	0	x	0	x	0

उपरोक्त गीत में सात बहनों के एक भाई होने की बात स्पष्ट है। सातों बहनों का विवाह विभिन्न स्थानों पर होता है। कैलाश पर्वत पर शिव-पार्वती के सिवाय किसी अन्य का निवास स्थान नहीं है अतः अकेली (पार्वती) माँ नन्दा मायके से भाई के आने पर उसे वही रहने का अनुरोध करती हुई रोने लगती है।

गढ़वाल के अंतर्गत अलकनंदा और मन्दाकिनी के संगम पर स्थित नन्दप्रयाग और उसके निकट नौटी ग्राम में माँ नन्दा को आज भी कन्या रूप में पूजा जाता है।

- **पुराणों के प्रसंगानुसार-** बारह पुराण की नवमी तिथि का अत्यंत महत्व है इसमें वेत्रासुर द्वारा समस्त देवताओं को पराजित करने पर माँ आदिशक्ति ने अयोनिजा जन्मावतार लेकर प्रचण्ड असुर वेत्रासुर को दिव्यास्त्रों द्वारा भयंकर युद्ध के पश्चात् मृत्युदण्ड दे डाला तथा ब्रह्मजी ने के आग्रह पर समस्त देवताओं ने नवमी तिथि पर हिमालय में जाकर देवी की स्थिरचित एवं ध्यान समाधि की अराधना की तथा देवी से अनुरोध किया कि भविष्य में भी एक महिषासुर नामक राक्षस के संहार हेतु उन्हें आपके देवीस्वरूप की आवश्यकता पड़ेगी अतः वे तब तक हिमालय पर विराजमान रहें तभी हिमालय पर आनन्दपूर्वक विराजमान होने के कारण देवी का नाम **'नन्दा'** पड़ा।
- **दूसरा प्रसँग** महाभारत के भीष्म पर्व का है जिसमें जटा कुरुक्षेत्र में युद्ध आरम्भ से पूर्व श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को आदि शक्ति दुर्गा की स्तुति करने के लिए कहा था प्रस्तुत श्लोक की तीसरी एवं चतुर्थ पक्तियाँ निम्नवत् है : -

"अष्ट शूल प्रहरेणा खड्क खेटक धारिणी।
गोपेन्द्र स्यानुजे ज्येष्ठे नन्द गोप कुलोद्भवे॥"[2]

अर्थात् तुमने नंद गोप के वंश में अवतार लिया था, इसलिए गोपेश्वर श्रीकृष्ण की तुम छोटी बहिन हो, परन्तु गुण और प्रभाव की दृष्टि से तुम सर्वश्रेष्ठ हो। इस स्रोत की फलश्रुति भयनाश करने वाली बताई गई है अतः स्पष्ट है कि नन्द की पुत्री होने के कारण देवी का **'नन्दा'** नाम सुप्रसिद्ध हुआ।

- **तृतीय प्रसंग** मार्कण्डेय पुराण का **"मूर्ति रहस्य"** अध्याय का प्रथम श्लोक निम्नवत् है:

"ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा
स्तुतासापूजिता भक्त्या वशीकुर्यातज्जगत्त्रथम्।"[3]

अर्थात् भक्तिभाव से स्तुति करने पर नन्द की पुत्री नन्दा देवी, तीनों लोकों को अपने उपासकों के वश मे करा सकती है।

- **मार्कण्डेय पुराण-** दुर्गासप्तशती के अध्याय 11 का श्लोक : -

"वैवश्वन्तरे प्राप्ते अष्ट विशांतिमे युगे।
शुम्भ निशुम्भचैवान्या उत्पत्स्यते महासुरो।।
नन्द गोप गृहे जाता यशोदा गर्भ सम्भवा।
ततस्तो नाशयिष्यामि विन्ध्याचल निवासिनी॥"[4]

प्रस्तुत श्लोक के अंतर्गत देवी स्वयं कहती है कि हे देवताओं वैवश्वत मन्वन्तर के अट्ठाईसवें युग में शुम्भ और निशुम्भ नाम के अन्य दो महाअसुर उत्पन्न होंगें तत्पश्चात् मैं नन्द गोप के घर माँ यशोदा के गर्भ से अवतीर्ण होकर विन्ध्या पर्वत में निवास कर उक्त दोनों असुरों का नाश करूँगी।

अनेक अनुश्रुतियों के अंतर्गत मां नन्दा को शिव की ही पत्नी माना जाता है। **"एक कुमाँऊनी आँठू में नंदा की गाथा गौरा - महेश्वर के रूप में चित्रित है। इसके अनुसार भेड़ चराने के अवसर पर दोनों का मिलन होता है और इसके पश्चात् विवाह।"[5]**

प्रस्तुत अन्य जागर के आधार पर नन्दा जात की कथा इस प्रकार है कि : -

देवी पार्वती ने मन में स्मरण किया कि मेरे लिए (ऋषिकेश) अथवा हिमालय के क्षेत्र वाले भाग में जन्म होना श्रेयस्कर होगा चूँकि हिमालय की ऋषासौ में हिमवन्त नाम का ऋषि तुल्य राजा था जिनके घर आदिशक्ति ने जन्म लेनी की ठानी एवं प्रातःकाल जब हिमवंत ऋषि स्नान को गए तो उन्हें पनघट पर एक सुन्दर कन्या दिखाई दी उन्होंने मन ही मन कन्या को घर ले जाने का विचार सोचा तथा घर पहुँचकर कन्या के विषय में अपनी स्त्री को बताया, उनकी पत्नी का नाम **मैयना (मयना)** था तथा वह अस्सी वर्ष की वृद्धा थी। जब वह नौधार वाले पनघट पर गयी तब वह कन्या कही दिखाई नहीं दी। मैयना ने पनघट पर जलग्रहण किया उसी जल के साथ माँ आदि शक्ति उनके उदर में प्रविष्ट हो गयी। कन्याजन्म के पश्चात् चारों ओर खुशियाँ मनायी गयी। जब कन्या 11 दिन की हो गई उनका नामकरण नंदा के नाम से हुआ वह उसी दिन से कहने लगी कि मैं अपने स्वामी शिव के यहाँ जाना चाहती हूँ सभी को आश्चर्य हुआ परन्तु वह अलौकिक शक्ति थी तथा समय आने पर उनका विवाह शिव जी से हो गया विवाह पश्चात् जब नंदा श्वसुर घर जा रही थी तो कर्णप्रयाग (कर्णकुण्ड) स्थान के बाद वह शैलेश्वर सिद्धपीठ की तरफ गए वहाँ माँ नन्दा को बनाणी गाँव पसंद आ गया जब नन्दा वहाँ पहुँची तो वहाँ के **जमनसिंह जदोड़ा** ने देवी का पूजन किया और देवी से वचन लिया कि जब भी देवी की राजजात होगी, देवी उनका कलेवा लेकर जाएगी। यह क्रिया मेरे वंशवाले भी करते रहेंगे। देवी ने वचन दिया कि हर बारह वर्ष में मेरी राजजात की जाएगी तत्पश्चात् देवी नैणी गाँव पहुँची वहाँ के नैनवालों से भी उन्होंने कहा बारह वर्ष पश्चात् मेरी राजजात होगी तो **'छंतोली'** लेकर आना। आगे बढ़कर जब देवी नौटी के पलवाली नामक खेत पर पहुँची तो अति प्रसनता के साथ उन्होंने कहा कि यह तो मेरी ऋषासौ की तरह क्षेत्र है में आज यही निवास करूँगी नौटी अबसे मेरा मायका कहलाएगा। नौटी के विजयदेव नौटियाल ने देवी का सम्मान अपनी बेटी की भाँति किया तथा अपनी बेटी की तरह सारे गाँव वालों ने विदा किया। देवी ने प्रसन्न होकर कहा - मैं नौटी के आद्य-गौड़ों की नौबती स्वीकार करती हूँ। नौटी के नौटियाल राजगुरु है इसलिए मै **राजराजेश्वरी** के नाम से जानी जाऊँगी अतः विदा होते हुए देवी ने स्मरण कराया कि प्रत्येक बारह वर्ष पश्चात में, तुम ही मेरी राजजात का प्रबन्ध करोगे और मायके की दशा से अवगत कराओगे तत्पश्चात् देवी नौटी से शैलेश्वर पहुँची उन्होंने नौटी से प्राप्त किया कलेवा और खीर इत्यादि का शिवजी को भोग लगाया शिवजी ने नंदा से पूछा कि कहाँ गयी थी तो देवी ने कहा कि मैं अपने मायके ऋषासौ (नौटी) गयी थी। शैलेश्वर से देवी **काँसुवा** गयी। वहाँ के राज वंशियों ने देवी को पहचाना ओर कहा कि हमारी बेटी कहाँ से आयी है? उन्होंने भी देवी को सम्मान पूर्वक विदा किया। देवी ने जाते समय कहा कि तुम मेरे लिए रिंगाल की छंतोली बनाकर ऋषासौ (अब नौटी) ले जाना और मेरी राजजात की मनौती कर लेना और छंतोली को शैलेश्वर पहुंचा देना। मै इस क्षेत्र में **चार सिंह वाला मेंढ़ा** (खाडू) उत्पन्न करूँगी उसको लेकर मेरे लिए वस्त्र, आभूषण, चबेना इत्यादि लाकर मेरी राजजात में आना।

काँसुवा के कुँवरों ने भी यह बात स्वीकार की तथा देवी ने काँसुवा में प्रस्थान किया तथा बेनीताल, कोटी क्यूर, भगोती, कोलसारी, नन्दकेशरी, तिलफाड़ा, लोहागंज, बाण, गेरोली पातल आदि स्थानों में विश्राम करते हुए आगे बढ़ी एवं जिन-2 स्थानों पर देवी ने विश्राम किया वहाँ वहाँ के लोगों से छंतोली माँगने को कहा।

"गैरोली पाताल से आगे वैतरणी है। वहाँ पर नंदा को भेजनेवाले राजजात के यात्रियों ने गोल घेरा बनाया और हाथ में सूत लेकर खड़े हो गये। नौटी के आद्य गौड़ ब्राह्मण ने कुँवरों के मुखिया के हाथ से पितरों के पिण्ड कराये। इस स्थान से आगे कैला विनेक (विनायक) होते हुए घनघोर जंगल में बसेरा किया। शिव के गण वहाँ से सारा सामान ले गये और वहीं से भारवाहकों को विदा किया गया। आज भी वही से भारवाहक वापस आ जाते है। वहीं पर रूपकुण्ड है।"[6]

अत: **नन्दादेवी का प्रतीक रिंगाल की छतोली** और **चौसिंगिया खाडू** की पूजा के पश्चात **नंदादेवी राजजात** का शुभारंभ हो जाता है अतः **नन्दाष्टमी** के दूसरे दिन नवमी को हेमकुण्ड में नंदादेवी की पूजा, यज्ञ होते है परन्तु सभी

छंतोलियों को देवी के लिए अर्पित कर दिया जाता है। **"चौंसिंगिया खाडू" (मेंढा)** पूजा सामग्री लेकर अपने अगम्य स्थान को रवाना हो जाता है और यात्री अपने घरों को लौट जाते हैं।

अत: उत्तराखण्ड लोक संस्कृति में धार्मिक पर्वों, उत्सवों, त्यौहारों, मेला/थौलों अथवा धार्मिक परंपरा के बयार प्रत्येक ऋतु-महिनों में देखे जा सकते हैं। मशक बीन, ढोल-दमाऊं की थाप एवं उनकी धुनों में नाचते गाते लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। नंदा राजजात यात्रा की विशेषता यह है कि यह यात्रा जिन-२ स्थानों से होकर निकलती है वहाँ के रमणीय प्राकृतिक नजारों से रूबरू करती चलती है। अत: नंदा देवी राजजात विशुद्ध रूप से धार्मिक-आध्यात्मिक आयोजन है किन्तु व्यवहारिक जीवन के दृष्टिकोण से इसकी उपयोगिता सार पूर्ण है। एक ओर इसमें पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी को सुदृढ़ करने का संदेश है तो वहीं दूसरी ओर बेटियों के सम्मान और प्यार की रक्षा का संकल्प भी है अत: यह उत्सव सामाजिक सरोकारों व सांस्कृतिक विरासत का संवाहक है।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. मैठानी, डॉ तुष्टि (2006) भारतीय आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में गढ़वाली लोक संगीत, सत्यम् पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृ. स. - 205-06।
2. सिंह रावत, चन्द्रपाल (2011) गढ़वाल और गढ़वाल, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून, पृ. सं. 277।
3. वहीं|
4. वहीं|
5. सिंह बर्त्वाल, डॉ. वीरेन्द्र (2014) गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून, पृ.सं०-88।
6. नौटियाल, डॉ. शिवानंद (2003) गढ़वाल के लोक नृत्यगीत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ.सं. 103।
7. चातक, डॉ. गोविन्द (2014), भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली।
8. अनंत आवाज, राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका।